Sone Ka Anda (Hindi)

सोने का अन्डा

सफ़हात 17

सोने का अन्डा	01
एक अ़जीबो ग़रीब क़ौम	08
एक रोटी पर गुज़ारा	13
सिर्फ़ क़ब्र की मिट्टी ही से पेट भरेगा	15

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**सोने का अन्डा**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

सोने का अन्डा

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला ''सोने का अन्डा'' पढ़ या सुन ले उस को जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला दे कर अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोसी बना ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : बरोज़े क़ियामत लोगों में मेरे क़रीब तर वोह होगा, जिस ने मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे । (ترمذی ج۲ ص۲۷ حدیث ۴۸۴، دار الفکر بیروت)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

सोने का अन्डा

किसी घर में एक अ़जीबो ग़रीब नागिन (Female cobra) रहती थी जो रोज़ाना सोने का एक अन्डा (Golden egg) दिया करती थी । घर का मालिक मुफ़्त की दौलत मिलने पर बहुत ख़ुश था । उस ने घर वालों को ताकीद कर रखी थी कि वोह येह बात किसी को न बताएं । कई माह तक येह सिल्सिला यूंही चलता रहा । एक दिन नागिन ने उन की बकरी को डस (Bite) लिया और देखते ही देखते बकरी मर गई । घर वालों को बड़ा ग़ुस्सा (Anger) आया और वोह नागिन को ढूंढने लगे ताकि उसे मार सकें मगर उस शख़्स ने येह कह कर उन्हें ठन्डा कर दिया कि ''हमें नागिन से मिलने वाला सोने का अन्डा बकरी की क़ीमत से कहीं ज़ियादा महंगा है,

लिहाज़ा परेशान होने की ज़रूरत नहीं।'' कुछ अ़र्से बा'द नागिन ने उन के पालतू गधे (Pet donkey) को डस लिया और वोह भी फ़ौरन मर गया। वोह लालची शख़्स घबराया मगर थोड़ी ही देर में दोबारा लालच के नशे में आ गया और कहने लगा : ''इस ने आज हमारा दूसरा जानवर मार डाला, ख़ैर कोई बात नहीं, इस ने किसी इन्सान को तो नुक़्सान नहीं पहुंचाया।'' घर वाले चुप हो रहे। इस के बा'द दो साल तक नागिन ने किसी को न डसा, घर वाले अपने जानवरों को भूल गए। अचानक एक दिन फिर नागिन ने उन के ग़ुलाम को डस लिया। उस बेचारे ने मदद के लिये अपने मालिक को पुकारा, मगर इस से पहले कि मालिक उस तक पहुंचता, ज़ह्र (Poison) की वज्ह से ग़ुलाम मर गया। अब वोह लालची (Greedy) शख़्स परेशान हो कर कहने लगा : ''इस नागिन का ज़ह्र तो बहुत ख़त़रनाक है, इस ने जिस जिस को डसा वोह फ़ौरन मर गया, कहीं येह मेरे घर वालों में से किसी को न डस ले।'' वोह कई दिन इसी परेशानी में रहा, मगर सोने के अन्डे की चमक दमक ने एक बार फिर उस की आंखों पर पट्टी बांध दी और येह सोच कर ख़ामोश हो गया कि ''अगर्चे नागिन की वज्ह से हमें नुक़्सान हो रहा है मगर सोने के अन्डे भी तो मिल रहे हैं।''

कुछ ही दिनों बा'द नागिन ने उस के बेटे को डस लिया। फ़ौरन डॉक्टर को बुलाया गया लेकिन वोह भी कुछ न कर सका और उस के बेटे ने तड़प तड़प कर जान दे दी। जवान बेटे की मौत मियां बीवी पर बिजली बन कर गिरी और वोह शख़्स ग़ुस्से में आ कर कहने लगा : ''अब मैं इस नागिन को ज़िन्दा नहीं छोड़ूंगा।'' मगर वोह उन के हाथ न आई। जब काफ़ी अ़र्सा गुज़र गया तो सोने का अन्डा न मिलने की वज्ह से उस की लालची त़बीअ़त में बेचैनी होने लगी, चुनान्चे दोनों मियां बीवी नागिन के बिल के पास आए, वहां की सफ़ाई की और धूनी दे कर ख़ुश्बू महकाई, (गोया नागिन को सुल्ह़ का पैग़ाम दिया।) हैरत अंगेज़ त़ौर पर वोह वापस आ गई और उन्हें फिर से सोने का अन्डा मिलने लगा।

मालो दौलत की हिर्स ने उन्हें अन्धा कर दिया और वोह अपने बेटे और ग़ुलाम की मौत को भूल गए। एक दिन नागिन ने उस की ज़ौजा (Wife) को सोते में डस लिया, थोड़ी ही देर में उस ने भी दम तोड़ दिया। अब वोह लालची शख़्स अकेला रह गया तो उस ने नागिन वाली बात अपने भाइयों और दोस्तों को बताई। सब ने मश्वरा दिया : "तुम ने बहुत बड़ी ग़लती की, अब भी वक़्त है संभल जाओ और जितनी जल्दी हो सके उस ख़तरनाक नागिन को मार डालो।" अपने घर आ कर वोह शख़्स नागिन को मारने के लिये मौक़अ़ ताक कर बैठ गया। अचानक उसे नागिन के बिल के क़रीब एक क़ीमती मोती नज़र आया जिसे देख कर उस की लालची त़बीअ़त ख़ुश हो गई। दौलत की हवस ने उसे सब कुछ भुला दिया, वोह अपने आप से कहने लगा : "वक़्त त़बीअ़तों को बदल देता है, हो सकता है उस नागिन की त़बीअ़त भी बदल गई होगी कि जिस त़रह़ येह सोने के अन्डों के बजाए अब मोती देने लगी है, इसी त़रह़ उस का ज़ह़र भी ख़त्म हो गया हो, चुनान्चे अब मुझे उस से कोई ख़त़रा नहीं।" येह सोच कर उस ने नागिन को मारने का इरादा ख़त्म कर दिया। रोज़ाना एक क़ीमती मोती मिलने पर वोह लालची शख़्स बहुत ख़ुश रहने लगा और नागिन की पुरानी धोकाबाज़ी को भूल गया। एक दिन उस ने सारा सोना और मोती बरतन में डाले और उस पर सर रख कर सो गया। उसी रात नागिन ने उसे भी डस लिया। जब उस की चीख़ें बुलन्द हुईं तो आस पास के लोग वहां पहुंच गए और उस से कहने लगे : "तुम ने उसे मारने में सुस्ती की और लालच में आ कर अपनी जान दाउ पर लगा दी!" लालची शख़्स शर्म के मारे कुछ न बोल सका, उस ने सोने से भरा हुवा बरतन अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को देते हुए निहायत ह़सरत के साथ कहा : "आज के दिन मेरे नज़्दीक इस माल की कोई क़ीमत नहीं, क्यूं कि अब येह दूसरों का हो जाएगा और मैं ख़ाली हाथ इस दुन्या से चला जाऊंगा।" और फिर कुछ ही देर में वोह मर गया। (عیون الحکایات ص ۹۳۴ ملخصاً، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा कि मालो दौलत की हिर्स ने हंसते बसते घर को उजाड़ कर रख दिया ! हरीस की निगाह महदूद (Limited) होती है जो सिर्फ़ वक़्ती फ़ाएदा देखती है जिस की वज्ह से वोह दुरुस्त फ़ैसले करने में नाकाम रहता है जैसा कि इस हिकायत में लालची शख़्स को दौलत के नशे ने ऐसा मदहोश (Intoxicate) कर दिया कि बेटे और ज़ौजा की मौत भी उसे होश में न ला सकी, और बिल आख़िर वोह खुद भी मौत के मुंह में जा पहुंचा।

देखे हैं येह दिन अपनी ही ग़फ़लत की बदौलत सच है कि बुरे काम का अन्जाम बुरा है

हिर्स किसे कहते हैं ?

''ख़्वाहिशात की ज़ियादती के इरादे का नाम हिर्स है और बुरी हिर्स येह है कि अपना हिस्सा हासिल कर लेने के बा वुजूद दूसरे के हिस्से की लालच रखे। या किसी चीज़ से जी न भरने और हमेशा ज़ियादती की ख़्वाहिश रखने को हिर्स, और हिर्स रखने वाले को हरीस कहते हैं।''

(مرقاۃ ج۹ص۱۱۹، تحت الباب ۲، دار الفکر بیروت, मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 86 मुफ़स्सलन, ज़ियाउल क़ुरआन पब्लीकेशन्ज़)

नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बदतर है वोह बन्दा जिस का रहनुमा हिर्स हो, बदतर है वोह बन्दा जिस को ख़्वाहिशात राहे हक़ से भटका दें, बदतर है वोह बन्दा जिस का शौक़ और रग़बत उस को ज़लीलो ख़्वार कर दे। (ترمذی ج۴ص۳۰۲ حدیث ۲۵۴۲)

हिर्स में हलाकत है

जन्नती सहाबी हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللهُ عَنْه ने एक मरतबा नसीहतें करते हुए बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : लोगो ! हिर्स (से बचो कि इस) में तुम्हारे लिये हलाकत है, क्यूं कि येह कभी ख़त्म नहीं होती और न तुम हिर्स को पूरा कर सकते हो।

(صفۃ الصفوۃ ج۱ص۱۰۳ الرقم ۴۶، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

हम हिर्स से बच नहीं सकते

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हिर्स ऐसी चीज़ है कि दूध पीता बच्चा हो या नौ जवान, 100 साल का बूढ़ा हो या औरत, अफ़्सर हो या मज़दूर, ग़रीब हो या अमीर इस से बचना बहुत मुश्किल है, येह अलग बात है कि किसी को सवाबे आख़िरत की हिर्स होती है तो किसी को मालो दौलत की, किसी को इ़ज़्ज़तो शोहरत की और किसी को सब में नुमायां नज़र आने की ! अल ग़रज़ हिर्स किसी न किसी अन्दाज़ से हमारे अन्दर मौजूद होती है ।

अल्लाह पाक क़ुरआने करीम की **सूरए निसाअ** की आयत 128 में इर्शाद फ़रमाता है :

وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ الشُّحَّ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और दिल लालच के फन्दे में हैं ।

''**तफ़्सीरे ख़ाज़िन**'' में इस आयत के तह़्त लिखा है : लालच (Greed) दिल का लाज़िमी हिस्सा है, क्यूं कि येह इसी त़रह़ बनाया गया है । (تفسیر الخازن ج۱ص۳۴۷، مصر)

दो चीज़ें जवान रहती हैं

अल्लाह पाक के आख़िरी रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इन्सान बूढ़ा हो जाता है और उस की दो चीज़ें जवान रहती हैं : माल की हिर्स और उ़म्र की हिर्स । (مسلم ص۵۲۱ حدیث ۱۰۴۷، دار ابن حزم بیروت)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : यहां आ़म दुन्यादार इन्सान मुराद है जो बुढ़ापे में भी ह़रीस रहता है, बा'ज़ **अल्लाह** के बन्दे जवानी में भी ह़रीस नहीं होते वोह इस हुक्म से अ़लाह़दा हैं मगर ऐसे ख़ुश नसीब बन्दे हैं बहुत थोड़े, उ़मूमन वोह ही ह़ाल है जो यहां इर्शाद हुवा । उ़मूमन बूढ़े आदमी माल जम्अ़ करने, माल बढ़ाने में बड़े मश्ग़ूल रहते हैं, हमेशा ज़िन्दगी की दुआ़एं कराते हैं,

अगर कोई उन्हें कोसे तो लड़ते हैं, येह है महब्बते माल व उम्र। **ह़रीस का दिल या क़नाअ़त से भरता है या क़ब्र की मिट्टी से।**

(मिरआत, जि. 7, स. 88)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ह़िर्स की तीन क़िस्में

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़म तौ़र पर येही समझा जाता है कि ह़िर्स का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ "**मालो दौलत**" के साथ होता है, ह़ालां कि ऐसा नहीं है, क्यूं कि ह़िर्स तो किसी शै की मज़ीद ख़्वाहिश करने का नाम है और वोह चीज़ कुछ भी हो सकती हे, चाहे माल हो या कुछ और ! चुनान्चे मज़ीद माल की ख़्वाहिश रखने वाले को "**माल का ह़रीस**" कहेंगे, ज़ियादा खाने की ख़्वाहिश रखने वाले को "**खाने का ह़रीस**" कहा जाएगा और नेकियों में इज़ाफ़े के तमन्नाई को "**नेकियों का ह़रीस**" जब कि गुनाहों का बोझ बढ़ाने वाले को "**गुनाहों का ह़रीस**" कहेंगे। हर ह़िर्स बुरी नहीं होती, बुन्यादी तौ़र पर ह़िर्स की तीन क़िस्में बनती है : **(1)** अच्छी ह़िर्स **(2)** बुरी ह़िर्स **(3)** मुबाह़ ह़िर्स।

(1) अच्छी ह़िर्स : रिज़ाए इलाही के लिये किये जाने वाले नेक आ'माल اِنْ شَآءَاللّٰه इन्सान को जन्नत में ले जाएंगे, लिहाज़ा **नेकियों की ह़िर्स** मह़मूद (या'नी पसन्दीदा) होती है, मसलन फ़र्ज़ नमाज़ के साथ नवाफ़िल की ह़िर्स, फ़र्ज़ रोज़ों के साथ नफ़्ल रोज़ों की कसरत की ह़िर्स, ज़कात के साथ साथ नफ़्ली सदक़ा व ख़ैरात राहे ख़ुदा में देने की ह़िर्स, तिलावत, ज़िक्रुल्लाह, दुरूदे पाक वग़ैरा नेकियां करने की ह़िर्स अच्छी है।

(2) बुरी ह़िर्स : जिस त़रह़ गुनाह करना मन्अ़ है इसी त़रह़ गुनाह के कामों की ह़िर्स भी मम्नूअ़ है। मसलन बुरे काम रिश्वत, चोरी, बद निगाही, बदकारी, फ़िल्में ड्रामे देखने, गाने बाजे सुनने, शराब पीने, जूआ खेलने,

ग़ीबत, तोहमत, चुग़ली, गाली देने, बद गुमानी, लोगों के ऐ़ब ढूंडने और उन्हें उछालने वग़ैरा दीगर गुनाहों की ह़िर्स मज़्मूम (या'नी बुरी) है।

(3) मुबाह़ ह़िर्स : मुबाह़ का मत़लब है वोह अ़मल जिस का करना न करना एक जैसा हो। अलबत्ता अगर उस मुबाह़ काम से पहले अच्छी निय्यत कर ली जाए तो फिर वोह मुबाह़ काम भी सवाब का काम बन जाता है। मुबाह़ ह़िर्स की मिसालें येह हैं : खाने पीने, सोने, दौलत इकठ्ठी करने, उ़म्दा मकान बनाने, नित नए लिबास पहनने और दीगर **बहुत** सारे काम **मुबाह़** हैं, जिन की ज़ियादती की ख़्वाहिश **मुबाह़ ह़िर्स** है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमें सिर्फ़ और सिर्फ़ उन कामों की ह़िर्स करनी चाहिये जिन से हमें दुन्या व आख़िरत का नफ़्अ़ ह़ासिल हो और येह **नेकियों की ह़िर्स** में ही हो सकता है। जब कि बुरी ह़िर्स में सरासर नुक़्सान है क्यूं कि येह हमें जहन्नम में पहुंचा सकती है और **मुबाह़ ह़िर्स** (या'नी जाइज़ चीज़ों की ह़िर्स) में अगर्चे गुनाह नहीं, लेकिन येह गुनाहों तक पहुंचा सकती है, जैसा कि जो कोई माल कमाने का ह़रीस हो जाता है तो आ़म त़ौर पर वोह ह़लालो ह़राम ज़राएअ़ की परवाह किये बिग़ैर माल जम्अ़ करने में लगा रहता है और माल बेचने में झूट, धोका, फ़्रॉड वग़ैरा कई त़रह़ के गुनाहों में मुब्तला हो जाता है।

''**जन्नती ज़ेवर**'' में है : लालच और ह़िर्स का जज़्बा ख़ूराक, लिबास, मकान, सामान, दौलत, इ़ज़्ज़त, शोहरत, ग़रज़ हर ने'मत में हुवा करता है। अगर लालच का जज़्बा किसी इन्सान में बढ़ जाता है तो वोह इन्सान त़रह़ त़रह़ की बद अख़्लाक़ियों और बे मुरव्वती के कामों में पड़ जाता है और बड़े से बड़े गुनाहों से भी नहीं चूकता। बल्कि सच पूछिये तो ह़िर्सो त़मअ़ और लालच दर ह़क़ीक़त हज़ारों गुनाहों का सरचश्मा है, इस से ख़ुदा की पनाह मांगनी चाहिये। (जन्नती ज़ेवर, स. 111, मक्तबतुल मदीना)

दौलत की हिर्स दिल से अल्लाह दूर कर दे इश्क़े रसूल दे दे, कर येह दुआ रहे हैं
तक्सीरे मालो ज़र की हरगिज़ नहीं तमन्ना हम मांग आप से बस, ग़म आप का रहे हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह ज़ेहन बना लीजिये कि हमें सिर्फ़ और सिर्फ़ नेकियों का ह़रीस बनना है, नेकियां और सिर्फ़ नेकियां करनी हैं । **अल्लाह** पाक के सच्चे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने नसीह़त निशान है : उस पर ह़िर्स करो जो तुम्हें नफ़्अ़ दे । (مسلم ص ۲۳۴۱ حدیث ۴۶۶۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ज़करिय्या यह़या बिन शरफ़ नववी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : या'नी **अल्लाह** पाक की इ़बादत में ख़ूब ह़िर्स करो और इस पर इन्आ़म का लालच रखो मगर इस इ़बादत में भी अपनी कोशिश पर भरोसा करने के बजाए **अल्लाह** पाक से मदद मांगो । (شرح صحیح مسلم للنووی الجزء ۱۷ ج ۸ ص ۵۱۲، ملخصاً وملتقطاً، دار الکتب العلمیة بیروت)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि दुन्यावी चीज़ों में क़नाअ़त और सब्र अच्छा है मगर आख़िरत की चीज़ों में ह़िर्स और बे सब्री आ'ला है, दीन के किसी दरजे पर पहुंच कर क़नाअ़त न कर लो, आगे बढ़ने की कोशिश करो ।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 211)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

एक अ़जीबो ग़रीब क़ौम

मन्क़ूल है कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुल क़रनैन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه एक क़ौम के पास से गुज़रे तो देखा उन के पास दुन्यावी सामान नाम को भी न था, उन्हों ने बहुत सी क़ब्रें खोद रखीं थीं, सुब्ह़ के वक़्त वहां की सफ़ाई करते और नमाज़ अदा करते फिर सिर्फ़ सब्ज़ियां खा कर पेट भर लेते, क्यूं कि वहां कोई जानवर मौजूद न था जिस का वोह गोश्त खाते । ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुल क़रनैन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को उन का सादा अन्दाज़े ज़िन्दगी देख कर बड़ी ह़ैरत हुई, आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने उन के सरदार से पूछा : मैं ने तुम

लोगों को ऐसी ह़ालत में देखा है कि जिस पर किसी दूसरी क़ौम को नहीं देखा, इस की क्या वज्ह है ? तुम्हारे पास दुन्या की कोई चीज़ नहीं है और तुम सोना और चांदी से भी नफ़्अ़ नहीं उठाते ! सरदार कहने लगा : हम ने सोने और चांदी को इस लिये बुरा जाना कि जिस के पास थोड़ा बहुत सोना या चांदी आ जाती है वोह उन्ही के पीछे दौड़ने लगता है । आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने पूछा : तुम लोग क़ब्रें क्यूं खोदते हो ? और जब सुब्ह़ होती है तो उन को साफ़ करते हो और वहां नमाज़ पढ़ते हो । बोला : इस लिये कि अगर हमें दुन्या की कोई ह़िर्सो त़मअ़ हो जाए तो क़ब्रों को देख कर हम इस से बाज़ रहें । आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने पूछा : तुम्हारा खाना सिर्फ़ ज़मीन की सब्ज़ी क्यूं है ? तुम जानवर क्यूं नहीं पालते ताकि उन का दूध ह़ासिल करो, उन पर सुवारी करो और उन का गोश्त खाओ ? सरदार ने कहा : इस सब्ज़ी से हमारी गुज़र बसर हो जाती है और इन्सान को ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये इतनी चीज़ ही काफ़ी है और वैसे भी ह़ल्क़ से नीचे पहुंच कर सब चीज़ें एक जैसी हो जाती हैं, उन का ज़ाएक़ा पेट में मह़सूस नहीं होता । ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुल क़रनैन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस की ह़िक्मत भरी बातें सुन कर उसे पेशकश की : मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें अपना मुशीर (Advisor) बना लूंगा और अपनी दौलत में से भी ह़िस्सा दूंगा । मगर उस ने मा'ज़िरत कर ली कि मैं इसी ह़ाल में ख़ुश हूं । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुल क़रनैन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه वहां से तशरीफ़ ले गए । **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(تاریخ مدینہ دمشق ج۱۷ص ۳۵۳ تا ۳۵۵ ملخصاً، دار الفکر بیروت)

न हो अ़त़ा इस को मालो दौलत   न दीजे अ़त्तार को हुकूमत
येह तेरा त़ालिब है जाने रह़मत   नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب   صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

हमारी ह़ालते ज़ार

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या से दिलो जान से मह़ब्बत होने और आख़िरत की उल्फ़त में कमी की वज्ह से मुसल्मानों की भारी ता'दाद **अल्लाहुर्रह़ीम** और उस के रसूले करीम की याद से दूर है, जब कि गुनाहों और फ़ुज़ूलिय्यात की ह़िर्स में मसरूर (या'नी ख़ुश) है। अफ़्सोस सद करोड़ अफ़्सोस ! आज का नौ जवान लाइन में लग कर महंगे टिकट ख़रीद कर सारी सारी रात गुनाहों भरे प्रोग्राम्ज़ देखने सुनने को तय्यार है मगर नमाज़ अदा करने की ग़रज़ से चन्द मिनट के लिये मस्जिद का रुख़ करने से कतराता है, कई कई घन्टे रीमोट हाथ में पकड़े फ़िल्में ड्रामे देखने का वक़्त है मगर रिज़ाए इलाही पाने, अपनी आख़िरत संवारने और इल्मे दीन सीखने के लिये राहे ख़ुदा में आ़शिक़ाने रसूल के साथ मदनी क़ाफ़िले में सफ़र करने के लिये मुख़्तलिफ़ बहाने हैं। इ़श्के़ मजाज़ी को भड़काने वाले गन्दे नॉविल्ज़ पढ़ने के लिये घन्टों का वक़्त है और क़ुरआने करीम की तिलावत करने को दिल नहीं करता बल्कि सच्ची बात तो येह है कि दुरुस्त क़ुरआने करीम पढ़ना ही नहीं आता और न सीखने का शौक़ है, बुरे दोस्तों की गन्दी सोह़बत में घन्टों अपना वक़्त बरबाद करने के लिये वक़्त है मगर आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत में बैठ कर सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीखने का वक़्त नहीं। इस से पहले कि मौत आ जाए, बक़िय्या ज़िन्दगी को ग़नीमत जानते हुए फ़ौरन सारे गुनाहों से सच्ची तौबा कर लें और नेकियां करने लग जाएं।

वोह है ऐ़शो इ़शरत का कोई म़हल भी जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जह़ल से तू निकल भी येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

नेकियों की हिर्स बढ़ाने का त़रीक़ा

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! दौलत व ऐ़शो इ़शरत आने जाने वाली शै है, नेकियों की हिर्स कीजिये और अपना येह ज़ेह्न बनाइये कि मेरे पास माल की कसरत हो या न हो नेकियों की ज़रूर कसरत हो। नेक बनने और नेकियों की हिर्स पैदा करने के लिये **अल्लाह** वालों के वाक़िआ़त पढ़िये :

इ़बादत की आ'ला मिसाल

अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की पिंडलियां (Calves) नमाज़ में ज़ियादा देर खड़े रहने की वज्ह से सूज गई थीं। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस क़दर कसरत से इ़बादत किया करते थे कि अगर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से कह दिया जाता कि कल क़ियामत है तो भी अपनी इ़बादत में कुछ इज़ाफ़ा न कर सकते (या'नी उन के पास इ़बादत में इज़ाफ़ा करने के लिये वक़्त की गुन्जाइश ही न थी)। जब **सर्दी का मौसिम** आता तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मकान की छत पर सोया करते ताकि सर्दी आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को जगाए रखे और जब **गर्मियों का मौसिम** आता तो कमरे के अन्दर आराम फ़रमाते ताकि गर्मी और तक्लीफ़ के सबब सो न सकें, आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल शरीफ़ सज्दे की ह़ालत में हुवा। आप दुआ़ किया करते थे : **या अल्लाह !** मैं तेरी मुलाक़ात को पसन्द करता हूं तू भी मेरी मुलाक़ात को पसन्द फ़रमा। (اتحاف السادۃ المتقین ج ۱۳ص ۲۴۷، ۲۴۸، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मैं साथ जमाअ़त के पढ़ूं सारी नमाज़ें

अल्लाह इ़बादत में मेरे दिल को लगा दे

हिर्स का इलाज

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आम तौर पर माल ही की हिर्स की ख़्वाहिश होती है और इस हिर्स की वज्ह से दीगर कई तरह की हिर्स पैदा होती हैं, अगर माल की हिर्स से अपने आप को बचा लिया जाए तो **अल्लाह** पाक की इबादत करने, आरामो सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारने की सूरत बन सकती है। माल की हिर्स का सब से बड़ा इलाज "क़नाअ़त" है, चुनान्चे **शैख़ुल हदीस** हज़रते अ़ल्लामा मौलाना अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस क़ल्बी मरज़ का इलाज "**सब्रो क़नाअ़त**" है या'नी जो कुछ ख़ुदा की त़रफ़ से बन्दे को मिल जाए उस पर राज़ी हो कर ख़ुदा का शुक्र बजा लाए और इस अ़क़ीदे पर जम जाए कि इन्सान जब मां के पेट में रहता है, उसी वक़्त फ़िरिश्ता ख़ुदा के हुक्म से इन्सान की चार चीज़ें लिख देता है : इन्सान की उ़म्र, इन्सान की रोज़ी, इन्सान की नेक नसीबी, इन्सान की बद नसीबी, येही इन्सान का नविश्ता (Written) तक़्दीर है। लाख सर मारो मगर वोही मिलेगा जो तक़्दीर में लिख दिया गया है, नफ़्स इधर उधर लपके तो सब्र कर के नफ़्स की लगाम खींच लो। इसी त़रह़ रफ़्ता रफ़्ता क़ल्ब में क़नाअ़त का नूर चमक उठेगा और हिर्स व लालच का अंधेरा बादल छट जाएगा। (जन्नती ज़ेवर, स. 111)

हिर्स का इलाज करने और क़नाअ़त की ने'मत पाने और इस की फ़ज़ीलत जानने के लिये इस के बारे में कुछ मदनी फूल पढ़िये और हिर्स से जान छुड़ाने की कोशिश फ़रमाइये :

क़नाअ़त का लुग़वी मा'ना

इक्तिफ़ा करना (या'नी काफ़ी समझना)। सब्र करना। थोड़ी चीज़ पर राज़ी और ख़ुश रहना, जो मिले उसी में गुज़ारा करना, ज़ियादा त़लबी

और हिर्स से बचे रहना क़नाअ़त कहलाता है।

(फ़रहंगे आसिफ़िय्या, जि. 3, स. 400, मक्तबा संगे मील)

क़नाअ़त की दो ता'रीफ़ात

(1) ख़ुदा की तक़्सीम पर राज़ी रहना क़नाअ़त कहलाता है।

(التعریفات للجرجانی ص۱۲۶، دار المنار)

(2) ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन अ़ली तिरमिज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : क़नाअ़त येह है कि इन्सान की क़िस्मत में जो रिज़्क़ लिखा है उस पर उस का नफ़्स राज़ी रहे। (الرسالة القشیریة ص۱۹۷، دار الکتب العلمیة بیروت)

"क़नाअ़त" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से 5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(1) अल्लाह पाक परहेज़ गार, क़नाअ़त पसन्द और गुमनाम बन्दे को पसन्द फ़रमाता है। (مسلم ص۱۵۸۵ حدیث۲۹۶۵) **(2)** क़नाअ़त ऐसा ख़ज़ाना है जो कभी ख़त्म नहीं होता। (کتاب الزهد للبیهقی رقم ۱۰۴ ص۸۸، مؤسسة الکتب الثقافیة) **(3)** वोह काम्याब हो गया जो मुसल्मान हुवा और ब क़दरे किफ़ायत रिज़्क़ दिया गया और **अल्लाह** पाक ने उसे दिये हुए रिज़्क़ पर क़नाअ़त दी। (مسلم ص۴۲۵ حدیث۴۵۰۱) **(4)** मोमिनों में से बेहतरीन शख़्स क़नाअ़त पसन्द और बद तरीन शख़्स लालची होता है। (فردوس الاخبار ج۱ ص۵۶۳ حدیث ۷۰۷۲، دار الفکر بیروت) **(5)** ग़नी वोह नहीं जिस के पास कसीर माल हो, बल्कि ग़नी तो वोह है जिस का नफ़्स ग़नी हो। (مسلم ص۵۲۲ حدیث۱۰۵۱)

हिर्स ज़िल्लत भरी फ़क़ीरी है जो क़नाअ़त करे, तवंगर है

एक रोटी पर गुज़ारा

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ुरासान के

मालदार लोगों में से थे। एक दिन आप अपने महल से बाहर देख रहे थे कि एक शख़्स पर नज़र पड़ी जिस के हाथ में रोटी का एक टुकड़ा था जिसे वोह खा रहा था, खाने के बा'द वोह सो गया। आप ने एक ग़ुलाम से फ़रमाया : "जब येह शख़्स बेदार हो तो इसे मेरे पास लाना।" चुनान्चे उस के बेदार होने पर ग़ुलाम उसे आप के पास ले आया। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उस से फ़रमाया : "ऐ शख़्स ! क्या रोटी खाते वक़्त तुम भूके थे ?" उस ने अ़र्ज़ की : "जी हां !" पूछा : "क्या उस रोटी से तुम सेर हो गए ?" अ़र्ज़ की : "जी हां !" आप ने फिर सुवाल किया : "रोटी खाने के बा'द तुम्हें अच्छी त़रह़ नींद आई ?" अ़र्ज़ की : "जी हां !" उस की येह बातें सुन कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दिल में सोचा : "जब एक रोटी से भी गुज़ारा हो सकता है तो फिर मैं इतनी दुन्या ले कर क्या करूं !!" (احیاء العلوم ج۴ص۵۹۱، دار صادر بیروت)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

मालो दौलत की दुआ़ हम न ख़ुदा करते हैं
हम तो मरने की मदीने में दुआ़ करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 143, मक्तबतुल मदीना)

क़नाअ़त का ह़ुसूल

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه क़नाअ़त की ने'मत पाने का त़रीक़ा बयान फ़रमाते हैं जिस का ख़ुलासा कुछ यूं है : क़नाअ़त का ह़ुसूल तीन चीज़ों पर मौक़ूफ़ है : **(1)** सब्र **(2)** इ़ल्म और **(3)** अ़मल।

(1) पहली चीज़ अ़मल है या'नी मईशत में दरमियाना अन्दाज़ और ख़र्च में किफ़ायत इख़्तियार करना, जो शख़्स क़नाअ़त में बुज़ुर्गी चाहता है उसे चाहिये कि कम ख़र्च करे। ह़दीसे पाक में इर्शाद है : اَلتَّدْبِيْرُ نِصْفُ الْمَعِيْشَةِ **तरजमा :** तदबीर से काम लेना निस्फ़ मईशत है। (2) दूसरी चीज़ ख़्वाहिशात कम रखना है ताकि वोह किसी दूसरे ह़ाल में भी ज़रूरत की वज्ह से परेशान न हो। (3) तीसरी येह कि वोह इस बात को जान ले कि क़नाअ़त में इ़ज़्ज़त है और सुवाल करने से बचत है जब कि ह़िर्स व लालच में ज़िल्लत ही ज़िल्लत है, पस इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करते हुए इस (ह़िर्स) से जान छुड़ा ले। (एह़याउल उ़लूम का ख़ुलासा, स. 265, मक्तबतुल मदीना)

दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये
मेरी ह़ाजत से मुझे ज़ाइद न करना मालदार

(वसाइले बख़्शिश, स. 218)

ह़िर्स का एक और इलाज

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुआ़ मोमिन का हथियार है, ह़िर्सो त़मअ़ की नुहूसत से पीछा छुड़ाने और क़नाअ़त की दौलत पाने के लिये बारगाहे इलाही में गिड़गिड़ा कर दुआ़ कीजिये।

सिर्फ़ क़ब्र की मिट्टी ही से पेट भरेगा

अल्लाह पाक के सच्चे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़क़ीक़त बुन्याद है : अगर इन्सान के लिये माल की दो वादियां हों तो वोह तीसरी वादी की तमन्ना करेगा और इन्सान के पेट को तो सिर्फ़ मिट्टी ही भर सकती है और जो शख़्स तौबा करता है **अल्लाह** पाक उस की तौबा क़बूल फ़रमाता है।

(مسلم ص ۵۲۲ حدیث ۱۰۵۰)

सेठ जी को फ़िक्र थी इक इक के दस दस कीजिये

मौत आ पहुंची कि मिस्टर जान वापस कीजिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب   صلَّى اللهُ على مُحمَّد

किसी का मोह़ताज न हो

अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन वासेअ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ुश्क रोटी को पानी के साथ तर कर के खाते थे और फ़रमाते : जो शख़्स इस पर क़नाअ़त करता है वोह किसी का मोह़ताज नहीं होता। (اِحیاءُ العُلوم ج۳ص۲۹۸) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى اللهُ عليهِ واٰلهٖ وسلَّم

इमाम मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : ऐ़श कुछ वक़्त का है जो गुज़र जाएगा और चन्द दिनों में ह़ालत बदल जाएगी। अपनी ज़िन्दगी में **क़नाअ़त इख़्तियार कर,** राज़ी रहेगा और अपनी ख़्वाहिश ख़त्म कर दे, आज़ादी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेगा, कई मरतबा मौत सोने, याक़ूत और मोतियों के सबब (डाकूओं के ज़रीए़) आती है। (اِحیاءُ العُلوم ج۳ص۲۹۸)

याद रखिये ! मशक़्क़त दोनों में है, ह़िर्स में भी और क़नाअ़त में भी, एक का नतीजा बरबादी दूसरी का आबादी ! आप को क्या चाहिये ? इस का फ़ैसला आप ने करना है। जो क़नाअ़त करेगा اِنْ شَآءَ الله ख़ुश गवार ज़िन्दगी गुज़ारेगा। जिस के दिल में दुन्या की **ह़िर्स** जितनी ज़ियादा होगी उतनी ही ज़िन्दगी में बद मज़गी बढ़ेगी।

कान धर के सुन ! न बनना तो ह़रीसे मालो ज़र

कर क़नाअ़त इख़्तियार ऐ भाई थोड़े रिज़्क़ पर

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب   صلَّى اللهُ على مُحمَّد

अक़्वाल

1. आराम से ज़िन्दगी गुज़ारना चाहते हो तो अपने दिल से लालच निकाल दो ।
2. अगर उस्ताज़ क़नाअ़त पसन्द है तो उस के त़लबा भी लालच से बच कर रहेंगे ।
3. अपनी ग़ुर्बत और तंगदस्ती पर ग़ौर न करो, क्यूं कि इस में ग़ौर करते रहने से तुम्हारे ग़म में इज़ाफ़ा और ह़िर्स में ज़ियादती होगी ।
4. लालच और ह़िर्स को मत अपनाओ कि तुम सब से बढ़ कर नहीं हो सकते ।
5. ह़िर्स से रोज़ी नहीं बढ़ती मगर बन्दे की क़ीमत घट जाती है ।
6. क़नाअ़त एक ने'मत है और क़नाअ़त से बढ़ कर कोई सल्त़नत नहीं ।
7. जो कुछ पास है उसी पर क़नाअ़त कीजिये, ज़िन्दगी सुकून से गुज़रेगी ।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
सोने का अन्डा	1	ह़िर्स का इ़लाज	12
ह़िर्स किसे कहते हैं ?	4	क़नाअ़त का लुग़वी मा'ना	12
ह़िर्स में हलाकत है	4	क़नाअ़त की दो ता'रीफ़ात	13
हम ह़िर्स से बच नहीं सकते	5	5 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم	13
दो चीज़ें जवान रहती हैं	5	एक रोटी पर गुज़ारा	13
ह़िर्स की तीन क़िस्में	6	क़नाअ़त का ह़ुसूल	14
एक अ़जीबो ग़रीब क़ौम	8	ह़िर्स का एक और इ़लाज	15
हमारी ह़ालते ज़ार	10	सिर्फ़ क़ब्र की मिट्टी ही से पेट भरेगा	15
नेकियों की ह़िर्स बढ़ाने का त़रीक़ा	11	किसी का मोह़ताज न हो	16
इ़बादत की आ'ला मिसाल	11	अक़्वाल	17

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

हज़ार साल की इबादत से अफ़्ज़ल अ़मल

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिस (जाइज़) ख़्वाहिश के पूरा करने पर क़ुदरत हासिल न हो उस से महरूमी पर हसरत से फ़क़ीर की निकलने वाली आह मालदार की हज़ार साल की इबादत से अफ़्ज़ल है।

(احیاء العلوم، ج4 ص602)

978-969-722-023-6
01013107

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net